ISSN No. 2394-9996

``प्रगतिवादी काव्य में व्यक्त मानवतावाद``

डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार लक्ष्मण
महिला महाविद्यालय,
ता. गेवराई जिल्हा बीड

मार्क्सवाद ने मानवीयता को महत्व दिया, मार्क्स ने मानव को मानव के रूप में देखा। मार्क्स के समय मजदूरों का शोषण पूँजीपतियों द्वारा किया जाता था और श्रमिक वर्ग को श्रमिक के रूप में न देखकर शोषित वर्ग उन्हें शोषकों के साधन के रूप में देखा जाता था। मार्क्सवाद के इस मानवीयता तत्व का पालन प्रगतिवादी कवियों ने किया, इसीलिए तो इन कवियों का मूल स्वर मानवतावादी है। वे राष्ट्रीयता का धिक्कार करते हुए विश्व मानवतावाद की बात करते है। मनुष्य मात्र के लिए कर्म का संदेश देते है। व्यक्ति की अपेक्षा समूह शक्ति में इनका अधिक विश्वास है। सामाजिक यथार्थ दृष्टि को अपनाकर भी प्रगतिवादी कहीं भी निराश नहीं होता उसे मानवता की अपरिमित शक्ति में विश्वास है। मार्क्सवादी प्रमुख लेखक गोर्की में भी निर्बल को सशक्त दिखाने और शोषित एवं पीड़ित वर्ग को कर्म का संदेश सुनाकर उसमें उत्साह संचार करने की प्रकृति है। प्रगतिवादी कवि ने भी कर्म का संदेश सुनाया है। गिरते हुए व्यक्ति को उठाने का काम किया है। जैसे ``ओ मजदूर ओ मजदूर/तू ही सब चीजों का कर्ता/तू ही सब चीजों से दूर/तू चाहे तो पल में कर दे/ इस दूनिया को चकना चूर।``[1]

इन कवियों ने मजदूरों के उत्साह को बढ़ाया है। प्रगतिवादी कवियों ने समाज से पहले मानव की महत्ता को स्वीकार कर उसकी महत्ता को अंकित किया है। जन के उपरांत जनधारा का जयगान प्रस्तुत हुआ। `कवि और समाज` दिनकर की ऐसी कविता है जिसमें समाज को शीर्ष स्थान या प्रमुखता दी गई। व्यक्तिवादिता की प्रमुखता का परिणाम बताते हुए कवि ने हिमालय का संदेश दिया है ``जहाँ व्यष्टि स्वाधीन अधिक है नारा वहाँ छाएगा/अनुशासन के बिना व्यक्ति कुछ प्राप्त न कर पाएगा।``[2]

जहाँ पर कवियों ने आत्मसाधना का स्वर मुखरित किया है, वहाँ मानवतावादी दृष्टि की प्रमुखता है। प्रगतिवादी कवियों की धारणा है कि व्यक्ति,

गृह, ग्राम, समाज और राष्ट्र में अंतर नहीं माना जाए। समाज हित में मरण व्यथा को सहने के लिए कवि व्यक्ति के ऊपर समाज को महत्व देता है, परंतु व्यक्ति के महत्व को भुलाकर नहीं। संघर्ष में ही जीवन की सार्थकता को मानकर मानव को अपने मन की प्रत्येक परिस्थिति में रक्षा का आव्हान कवि करता है। पलायनवादी व्यक्ति संघर्ष पथ को प्यार करने योग्य नहीं बना सकता। अतः मानव को विकृति का जीवन नहीं, स्वास्थ सुदृढ़ भूमि पर व्यावहारिक रूप में प्रगतिवाद के जीवन को आत्मसात करना चाहिए। मानवतावादी दृष्टि प्रगतिवादी कवियों का संबल है, जिसके आधार पर संसार के मानवों को एक मंच पर विचरता और संघर्षरत करता है।

प्रगतिवाद ने हमें वास्तविक मानवतावाद दिया जो विषमता के नाश और समता पर आधारित है। यह मानवतावाद अध्यात्मवादी मानवतावाद नहीं है, जिसमें विश्वबंधुत्व की पुकार होने पर भी प्रत्येक वर्ण, वर्ग, जाति व संप्रदायगत विषमता का पोषण होता है। उसे सर्वहारा मानवतावाद भी कहा जाता है। यह नवनिर्माण के लिए वर्ग संघर्ष को स्वीकार करता है। साधन रूप में साध्य तो मानवता का हित है, जो कतिपय लोगों को अपदस्थ करने पर ही स्थापित हो सकता है। रांगेय राघव ने अपने `पिघलते पत्थर` नामक काव्य संग्रह में युगों से चलते आ रहे अपमान से व्याकुल मानव के अंतस्थ को वाणी देते है। रांगेय राघव में उद्‌गार नहीं, उपज भी है, कल्पना भी है और उपयुक्त शब्द भी। मानवता के अतीत, वर्तमान और भविष्य को स्पष्टतः देखने की दृष्टि भी है। अतः `पिघलते पत्थर` की रचना में आवेग भी है और कल्पना द्वारा भासित चित्र भी। पंत के अनुसार `युगवाणी` का रूप `पूजन` समाप्त के भावी रूप का पूजन है। वर्गहीन नये मानव की कल्पना के अनेक वर्णन वर्गहीन समाज के प्रसंग में देखे जा चुके है। इस नव मानव के चित्रण की दृष्टि `ग्राम्य` की नवराष्ट्रीय विनय तथा `युगवाणी` की मानव और नवमानव आदि कविताएँ विशेषताः दृष्टव्य है। नये मानव की मानवता के लिए वर माँगते हुए कवि लिखता है। ``हो धरणी जनों की जगत स्वर्ग जीवन का वर/नव मानव को दो प्रभू। नव मानवता का स्वर।``[3]

अंचल को शोषण और दैन्य से मुक्त इस नये मानव के स्वर्ण विहान की कल्पना निकट भविष्य में साकार होती दिखाई देती है। दलित, दीन और दरिद्र मानवता को देखकर कवि का ह्रदय करूणा और सहानुभूति से द्रवित होता है। एक ओर नंगे और भूखे कंगाल, दूसरी ओर धन और वैभव का अपार प्रदर्शन इस वैषम्य से मर्महीन होकर कवि कहता है। ``जहाँ हीरक की हार/जहाँ सोने का सुख संसार/जहाँ चाँदी का उज्वल हास/झूमता मधू का भारा/गंगन चुंबी प्रसाद

विशाल/संभाले है जिनको कंकाल/देखता हूँ विस्तृता/और यह कृष कंकाल/तड़पते भूखे बाल।``[4]

आज मानवता पर धन पिशाच ने विजय पा ली है। धर्म और ईश्वर तक उसके वश में हो चुके हैं। अतः कवि बोधिसत्व का आव्हान करते हुए कहता है। ``आज दीनता को पभु की पूजा का भी अधिकार नहीं/देव बना था क्या दुखियों के लिए निठुर संसार नहीं?/धन पिशाच की विजय धर्म की पावन ज्योति अदृश्य हुई,/दौंड़ों बोधिसत्व! भारत में मानवता अस्पृश्य हुई, /जागो गौतमे/ जागो महान/जागो अतीत के क्रांति गान।``[5]

श्रमिक वर्ग पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार को देखकर प्रगतिवादी कवि श्रमिक वर्ग को अत्याचार मिटाने के लिए उन्हें आत्मविश्वास प्रदान करते हुए कहता है कि ``रचेंगे अब हम नव संसार/न होने देंगे अत्याचार/प्रकृति ही का लेकर आधार/चलाएँगे सारे व्यवहार/सिद्ध कर देंगे बारमबार/और देखेगा विश्व अपार/जगत के केवल हम करतार।``[6] प्रगतिवादी कवियों ने दिखाया है कि, समस्त श्रमिक मानवता एक है, उसे जाति और धर्मगत कृत्रिम वर्ग में विभाजित नहीं किया जा सकता, परंतु शोषक श्रेणी ने स्वार्थ भावना से परिचालित होकर मानवता के कितने खंड़ कर दिए हैं, फिर भी प्रगतिवादी कवि आशा करते हैं कि, क्रांति के द्वारा इन विषमता अन्य रूढिगत संस्कारों से मुक्ति पाकर मानवता समाज का नव निर्माण अवश्य करेगी। ``असंस्कृत भूमि ये किसान की/धरती के पुत्र की/जोतनी है महरी, दो चार बार, इस बार/बोना महातिक्त वहाँ बीज असंतोष का/काटनी है नए साल फागुन में फसल जो क्रांति की।``[7]

मानवता के श्रेष्ठ गुणें का विकास ऐसे समाज में ही संभव हो सकता है, जो समता के सिद्धांत पर आधारित हो। विषमता ग्रस्त समाज में दानवता का ही प्राबल्य होता है। निम्नलिखित पंक्तियों में कवि इसी भाव को स्पष्ट करते हुए कहता हैं ``मनुजों की सहचरी! कहाँ अब तू होती है।तेरे होते देख हाय! क्या गति होती है। आधी दुनिया पड़ी सिसकती है, रोती है। /बिकट विषमता वृत्ति, बीज विष के बोती है।/ एक संबल स्वामी बना, अबल दूसरा दास है।``[8]

कहने का अभिप्राय यह है कि, प्रगतिवादी कवियों का लक्ष्य वर्गविहीन समाज की स्थापना है। इस नये समाज के नये मानव की उदात्त कल्पनाएँ प्रगतिवादी कवियों ने की है। पंत के अनुसार `युगवाणी` का रूप पूजन समाज का भावी रूप का पूजन है। वर्गहीन नये मानव की कल्पना के अनेक वर्णन वर्गहीन समाज के प्रसंग में देखे जा चुके हैं। इस नव मानव के चित्रण की दृष्टि से `ग्राम्या`

की `नवइंद्रिय`, `विनय` तथा `युगवाणी` की `मानव और नवमानव` आदि कविताएँ विशेषतः दृष्टव्य है। इन कविताओं के माध्यम से नव मानवता की आशा को जागृत करते हुए कवि लिखता है कि ``आ रहा मानव प्रगति का रक्त रंजित वह सबेरा;/ फिर न जिसके बाद होगा राज जड़ता का अँधेरा!/ और कर्कश रव श्रमगारों का मरण में लीन होगा/ जब न यह शोषण चलेगा जब न कोई दीन होगा।[9]

इस प्रकार देखते हैं कि, मार्क्सवाद ने जिस मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाया है उसी मानवीयता की स्थापना प्रगतिवादी कवियों ने अपने काव्य में की है। अर्थात प्रगतिवादी कवियों ने दलित, पीड़ित, शोषित व्यक्तियों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचारों का पर्दाफाश करते हुए उन्हें उस अन्याय अत्याचार के विरोध में आवाज उठाने के लिए प्रेरणा दी है।

संदर्भ सूची -

1. डॉ. रामविलास शर्माः प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, पृ.8
2. केदारनाथ अग्रवालः ओ मजदूर, पृ. 12
3. रामधारी सिंह `दिनकर`: चक्रवाल, पृ.76
4. सुमित्रानंदन पंतः ग्राम्या, पृ. 108
5. नरेंद्र शर्माः प्रभात फेरी, पृ. 101
6. रामधारी सिंह `दिनकर`: रेणुका, पृ. 16
7. `त्रिशुलः सुकवि` जुलाई, सन. 1939, पृ. 10
8. डॉ. रामविलास शर्माः रूपतरंग, पृ. 8
9. `त्रिशुलः सुकवि` जुलाई, सन. 1939, पृ. 15

☆ ☆ ☆